एक कहानी के ज़रिए कई दक्षताओं तक पहुँचना

मंजू रेवरिया

कहानियाँ बचपन का एक अहम हिस्सा होती हैं। हम सभी ने अपने बुज़ुर्गों से कहानियाँ सुनी हैं। कहानियाँ अकसर मनोरंजन के लिए सुनाई जाती हैं। हम स्कूल में बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं। इसका मक़सद मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों की कल्पनाशक्ति को विकसित करना, दुनिया के बारे में सीखना, संस्कृतियों की समानताओं को जानना, भावनाओं पर चर्चा करना और भाषा का अधिग्रहण करना होता है। कहानी की सम्भावनाओं की एक झलक इस लेख में प्रस्तुत है।

चित्र 1 : एक कहानी, ढेर सारी कल्पनाएँ

कहानी सुनाना

एक कहानी सुनाने से हम बच्चों को क्या-क्या सिखा सकते हैं, यह कहानी के चयन और उसे सुनाने वाले पर निर्भर करता है। मैंने बच्चों के साथ एक कहानी 'जल्द बहुत जल्द' पर चर्चा की। यह कहानी फ़ारिदेह ख़ल्अतबरी द्वारा लिखी गई है और अली नामवर ने इसके चित्र बनाए हैं। मैंने इस कहानी पर 4 अलग-अलग जगह के बच्चों के साथ कार्य किया। इस लेख में बच्चों के साथ किए इस काम के अनुभव प्रस्तुत हैं।

> **“मैंने हर एक अवसर पर बच्चों को बोलने की छूट दी थी। वो जब चाहें अपनी बात रख सकते थे।”**

कहानी का सार

शुरुआत एक छोटी-सी लड़की के सवाल से होती है। वह अपनी अम्मी से पूछती है, "हम कितने समय तक नानी के घर रहने वाले हैं?" अम्मी का जवाब होता है, "जब तक तुम्हारे अब्बू नहीं आते।" उसका अगला सवाल होता है, "और वो कब आएँगे?" बिना उसका जवाब दिए अम्मी कुछ सालों पीछे का सोचकर काँप जाती हैं। वो उन हालात और समय में खो जाती हैं जब वह उसके अब्बू, माने अपने शौहर, से अलग हुई थीं। छोटी लड़की बार-बार प्रश्न करती है कि अब्बू कब आएँगे? गुड़िया ख़रीदने से लेकर, ग़लीचा बनाते समय हर बार अम्मी का जवाब होता है, "जल्दी ही।" जब लड़की स्कूल से वापस आती है, पढ़ाई करने के बजाय ख़ुद से ही फुसफुसाती है कि तुम्हें जवाब पता है, फिर क्यूँ बार-बार अम्मी से पूछ रही हो।

बच्चों के साथ बातचीत

ग्रामीण और शहरी स्कूलों के बच्चों के साथ इस कहानी पर चर्चाओं में अन्तर बख़ूबी देखने को मिला। आप जान ही गए होंगे कि यह कहानी पति-पत्नी के अलग होने की है। लेकिन यह हुआ क्यों होगा, ये कहानी पढ़कर पता नहीं चलता। कहानी पढ़ने के बाद जब बच्चों से सवाल किया कि बच्ची के अब्बू कहाँ गए होंगे, उनके जवाब थे–

- उसके पापा कहीं बाहर नौकरी करते होंगे।
- आर्मी में भी हो सकते हैं।
- घर से दूर रहते होंगे।
- शायद वो भगवान के पास चले गए हैं।
- शहीद हो गए होंगे।

ग्रामीण व शहरी, किसी भी स्कूल के बच्चे ने यह नहीं कहा कि वे अलग हो गए होंगे या उनका तलाक़ हो गया होगा। सिर्फ़ एक ग्रामीण स्कूल के बच्चे ने कहा, "अरे दीदी! उनका तलाक़ हो गया होगा।"

मैंने पूछा, "आपको क्यों लगा कि तलाक़ हो गया होगा?"

बच्चे ने कहा, "दीदी! मेरे चाचा ने लव मैरिज की थी। मेरी चाची को यहाँ गाँव में रहना भी पसन्द नहीं आ रहा था, इसलिए झगड़ा होने लगा। अब उन दोनों ने तलाक़ ले लिया है। चाची अपने घर चली गईं।"

मैंने हर एक अवसर पर बच्चों को बोलने की छूट दी थी। वो जब चाहें अपनी बात रख सकते थे। कहानी भी ऐसी थी कि इसमें बच्चों को अपने विचारों को साझा करने में समय लग रहा था। कुछ बातें उन्होंने मेरे पूछे बग़ैर भी साझा कीं। जैसे–उसको अपने अब्बू की याद आती होगी, उसके अब्बू होते तो उसे गुड़िया भी लाकर देते, उसको घुमाने ले जाते, खिलौने लाते जैसे हमारे पापा लाते हैं, उसकी मम्मी को भी बहुत रोना आता होगा क्योंकि अब वो अकेली रह गई हैं, आदि। बच्चे साथ ही अपने कुछ उन दोस्तों का भी ज़िक्र कर रहे थे, जिनके पापा नहीं हैं। उन्होंने कहा कि जिन बच्चों के माँ-बाप नहीं होते वो हमेशा दु:खी ही रहते हैं। उनको अपने मामा या चाचा के घर रहना होता है, और उन्हें कोई वैसे नहीं रखता जैसे उनके अपने मम्मी-पापा रखते हैं।

"और जिनकी माँ होती है वो कैसे रहते हैं?" मैंने उनसे पूछा।

बच्चों ने कहा, "दीदी! माँ होती है तो भी ठीक रहता है।"

मैंने फिर पूछा, "अच्छा बताओ! क्या माँ का होना पापा से भी ज़्यादा ज़रूरी होता है?"

जवाब आया, "हाँ, क्योंकि माँ सब कुछ अच्छे से सँभाल लेती हैं।"

मैंने पूछा, "आपको ऐसा क्यों लगता है कि माँ सँभाल लेती हैं पापा नहीं?"

बच्चों ने कहा, "मम्मी घर-बाहर दोनों का काम कर लेती हैं, लेकिन पापा लोग तो बाहर का ही काम कर पाते हैं।

इस कहानी में लड़की की अम्मी ग़लीचा बनाने का काम करती हैं। मैंने हर समूह के बच्चों से यह प्रश्न पूछा, "उसकी मम्मी ग़लीचा क्यों बनाती होंगी?" यह प्रश्न पूछने का मक़सद यह जानना था कि बच्चे रोज़गार के प्रति कितने जागरूक हैं। सिर्फ़

चित्र 2 : कक्षा में मज़ेदारी से कहानी सुनते बच्चे और सुनातीं अध्यापिका

शहरी क्षेत्र के बच्चों ने जवाब दिया कि वह उनको बनाकर बेचती होंगी। ग्रामीण स्कूल के बच्चों के दिमाग़ में यह आया ही नहीं कि औरतें आजीविका कमाने के लिए ग़लीचा बनाने का काम भी करती हैं क्योंकि उन्होंने अपने आस-पास महिलाओं को ऐसे काम करते हुए नहीं देखा है।

मैंने अगला प्रश्न किया, "बताओ! मम्मी क्या-क्या काम करती हैं?"

जवाबों के ढेर लग गए। बच्चों ने काम गिनवाने शुरू किए जिनमें घरेलू और खेतों के काम भी शामिल थे। कुछ बच्चों ने बताया कि उनकी मम्मी सिलाई का भी काम करती हैं। इसी जवाब का मुझे इन्तज़ार था।

मैंने पूछा, "सिलाई ख़ुद के कपड़ों की या पैसे लेकर भी?"

बच्चों का जवाब आया, "पैसे लेकर भी।"

मैंने उनसे पूछा, "जिस काम से हम पैसे कमाते हैं उस काम को आप कैसे देखते हैं?"

वे एक दूसरे की तरफ़ ऐसे देखने लगे मानो उनको समझ नहीं आया। तब मैंने प्रश्न बदलकर पूछा, "सिलाई का जो काम है जिससे पैसे कमाए जा रहे हैं, वह वैसा ही काम है क्या जैसा पापा बाहर जाकर करते हैं और उससे पैसे मिलते हैं?"

बच्चों ने कहा, "हाँ दीदी! बस मम्मी घर रहकर करती हैं और पापा बाहर जाते हैं।"

> मैंने तब बच्चों को बताया कि ऐसा कोई भी काम जो हम पैसे कमाने के लिए करते हैं, उसे रोज़गार कहते हैं। नौकरी सिर्फ़ वही नहीं होती जिसमें कोई किसी ऑफ़िस में बैठकर काम करे। हर वो काम नौकरी है जिससे पैसे कमाए जाएँ, इसमें जगह मायने नहीं रखती।

अब ऐसे और काम बताओ जो आपकी मम्मी या महिलाएँ कर सकती हैं, और पैसे भी कमा सकती हैं। फिर से जवाबों की बरसात हुई। अचार, पापड़, नमकीन, सिलाई, पार्लर, आदि काम बच्चों ने बताए।

"बिन्दी को पैकेट में चिपकाना, उसके बण्डल बनाना, मोमबत्ती के पैकेट, चूड़ी बनाना, कंगन बनाना, जूते और जूतियों में सजावट, आदि काम भी होते हैं। क्या आपने इन कामों के बारे में कभी सुना या देखा है?" मैंने फिर पूछा।

"ये काम तो मशीन करती होंगी न दीदी!" एक बच्चे ने कहा। बातचीत हुई कि ऐसे बहुत सारे काम हैं जो आज भी मशीन से नहीं किए जा सकते। आप सभी को अपने परिवार के सदस्यों से बात करनी है, और इन कामों के बारे में पता करना है। अब हम कहानी के अगले हिस्से की तरफ़ बढ़े।

इस कहानी में एक जगह बच्ची अपनी गुड़िया से फुसफुसाती है, "मैं मज़ाक़ कर रही थी अम्मी से। मुझे कोई भाई-बहन नहीं है न, तो क्या तुम्हें भी ज़रूरत नहीं है?"

मैंने बच्चों से प्रश्न किया, "वह गुड़िया से ऐसी बातें क्यों कर रही है?" बच्चों का जवाब था, "उसके कोई भाई-बहन नहीं है

चित्र 3 : कहानी पर चर्चा करते बच्चे

इसीलिए वह गुड़िया से बात कर रही है। शायद उसको बुरा लगता है। वह अपनी गुड़िया के लिए एक और गुड़िया लाना चाहती है ताकि उसकी गुड़िया बिना बहन के दुःखी न हो।"

मैंने पूछा, "भाई-बहन इतने ज़रूरी हैं क्या?"

बच्चों ने कहा, "राखी बाँधने के लिए ज़रूरत होती है दीदी!"

मैंने प्रश्न किया, "दोस्त के बारे में आपका क्या कहना है?"

जवाब आया, "दोस्त सबसे ज़्यादा ज़रूरी होते हैं। बहन-भाई से भी ज़्यादा। बहन-भाई, पापा-मम्मी से चुगली कर फँसाते हैं, लेकिन दोस्त हमेशा साथ देते हैं और बचाते भी हैं। दोस्त, भाई और बहन के जैसे ही रहते हैं।"

मैंने पूछा, "जैसे का क्या मतलब है? बहन या भाई ही क्यों नहीं होते दोस्त?"

सभी बच्चे हँसकर बोले, "क्योंकि दोस्त अपने सगे भाई-बहन नहीं होते हैं न! हाँ, लेकिन दोस्त ज़्यादा अच्छे होते हैं दीदी!"

ग्रामीण और शहरी दोनों ही जगह के ज़्यादातर बच्चों ने दोस्तों को प्राथमिकता दी। यह सवाल मैंने इसीलिए किया था क्योंकि सभी बच्चे ख़ुद को कहानी की लड़की की जगह रखते हुए जवाब दे रहे थे।

सभी स्कूलों के बच्चों से इस प्रश्न पर भी बात हुई कि तलाक़ अच्छा होता है या बुरा? और क्यों? सभी बच्चों का एक ही जवाब था, बुरा होता है। बच्चों को बुरा लगता है और तक़लीफ़ होती है। लोग अच्छा नहीं मानते तलाक़ को। अलग नहीं होना चाहिए बस।

तब मैंने दो परिस्थितियाँ उनके सामने रखीं।

एक पति-पत्नी कुछ समय अच्छे से रहते हैं, फिर उनके बीच झगड़ा होने लगता है। झगड़ा होने के बहुत-से कारण हो सकते हैं। आप बताओगे, वे क्या हो सकते हैं?

बच्चों ने कहा, "दीदी! शराब पीता होगा, मार-पीट भी करता होगा, कमाता नहीं होगा, अपनी पत्नी की सुनता भी नहीं होगा, गाली-गलोच करता होगा।"

मैंने पूछा, "क्या आदमी की ही ग़लती होती होगी?"

बच्चों ने जवाब नहीं दिया।

मैंने पूछा, "मान लिया वह ऐसा करता है। क्या उसकी पत्नी को तलाक़ ले लेना चाहिए या मार-पिटाई खाते रहना चाहिए।"

लड़कियों का जवाब जल्दी आया, "ले लेना चाहिए।"

वहीं दूसरी परिस्थिति में, पत्नी शराब पीती है, लड़ाई करती है और उसको मारती है। इस पर बच्चे हँस दिए। अब उसको अपनी पत्नी के पास रहना चाहिए क्या?

जवाब आया, "नहीं, आदमी को तलाक़ ले लेना चाहिए दीदी!"

"पर तलाक़ तो बुरा होता है न! लोग क्या कहेंगे?" बच्चों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा और आत्मविश्वास के साथ बोले, "तलाक़ ले लेना चाहिए। लोगों का क्या है वह तो बोलते ही हैं।"

मैंने पूछा, "अब बताओ, तलाक़ अच्छा है या बुरा?"

बच्चों का कहना था कि तलाक़ न अच्छा है न बुरा, वो तो परिस्थिति पर निर्भर करता है।

कहानियाँ क्या करती हैं ?

कहानियाँ न सिर्फ़ परिवेश से जुड़े मुद्दों को खुलकर साझा करने के मौक़े देती हैं, बल्कि एक साझी समझ बनाने में भी मदद करती हैं। वह बच्चों को कहानी के किरदारों को महसूस करने का भी मौक़ा देती हैं। जैसे, इस कहानी में बच्चे, उस बच्ची की गुड़िया से हुई बातचीत से और उससे निकलते अकेलेपन के माध्यम से, अपने अकेलेपन को भी महसूस कर रहे थे। कहानी सुनकर भावनात्मक रूप से जुड़कर सहानुभूति की तरफ़ जाया जाता है, लेकिन उसके माध्यम से ख़ुद से जुड़कर, ख़ुद को किरदार की परिस्थिति में रखते हुए समानुभूति की तरफ़ बढ़ा जाता है। इससे सामाजिक मुद्दों को अच्छे से समझने में मदद मिलती है।

> **"कहानियाँ न सिर्फ़ परिवेश से जुड़े मुद्दों को खुलकर साझा करने के मौक़े देती हैं, बल्कि एक साझी समझ बनाने में भी मदद करती हैं।"**

इस कहानी से रोज़गार और तरह-तरह के काम के बारे में बातचीत हुई। ऐसे काम जो हाथों से किए जाते हैं, और ऐसे भी जो घर बैठकर करते हैं। यह भी कि, नौकरी की परिभाषा जो हमारे दिमाग़ में है, वह क्या है और ज़मीनी स्तर पर क्या-क्या नौकरियाँ हम देखते हैं? साथ ही, ऐसे रोज़गार हैं जिन्हें हमने अपने परिवेश में नहीं देखा है। यह वैसा ही है जैसे कुछ प्रमुख कामों को हम स्त्री-पुरुष में बाँटे हुए देखते हैं। कहानी पर चर्चा करते हुए ऐसी धारणाओं को हम तोड़ पाते हैं।

तलाक़ एक सामाजिक मुद्दा है जिसके बारे में बहुत कम बात होती है, और यदि होती भी है तो नकारात्मक। ऐसे कई सामाजिक मुद्दे हैं जिनके प्रति सकारात्मक सोच परे की बात है। उन पर बातचीत करने से अकसर हम कतराते हैं। लेकिन ऐसे मुद्दों की एक गहरी समझ हम कहानी के द्वारा बड़े अच्छे और रोचक ढंग से बना सकते हैं, बिना किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाए।

मंजू रेवरिया एकलव्य संस्था, नर्मदापुरम HITEC प्रोजेक्ट में पिछले 3 साल से कार्य कर रही हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों—शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्राथमिक भाषा—में इनकी रुचि है। वे बच्चों के साथ काम करते हुए अनुभवों को लिखकर अपने साथियों के साथ साझा करने का भी शौक़ रखती हैं।

सम्पर्क : manju.rewaria@eklavya.in